

देश के नागरिकों और युवा शक्ति के नाम एक खुला पत्र एवं इस्तीफ़ा

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF EDUCATION

TENDER MY RESIGNATION

I, Dharmendra Pradhan,
hereby tender my resignation from the post of
Minister of Education,
Government of India,
with immediate effect.

Date:


(Dharmendra Pradhan)



📢 अस्वीकरण 📢

"यह 'विशफुली योर्स' द्वारा रचित काल्पनिक कथा और इच्छात्मक सोच पर आधारित एक रचना है। इसका वास्तविक दुनिया की घटनाओं या आधिकारिक बयानों से कोई संबंध नहीं है।"

मेरे प्रिय युवा साथियों और देश के नागरिकों,

आज मैं बेहद भावुक दिल से, लेकिन एक बिल्कुल साफ मकसद के साथ यह बात सीधे आपसे कह रहा हूँ।

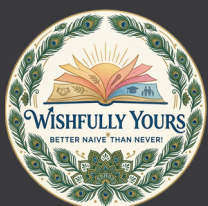
मेरी बिना शर्त माफी स्वीकार करें

पिछले कुछ हफ्तों से मैं अपने देश के युवाओं के मन में बसा हुआ गहरा दर्द, भयंकर चिंता और धोखे का अहसास बहुत करीब से देख रहा हूँ। शुरुआत में सरकार और आपके बीच जो प्रशासनिक दूरी दिखी, उसे देखकर आप सबको यकीनन ऐसा लगा होगा कि हम पूरी तरह से संवेदनहीन और पत्थर दिल हैं, और हमें अपने देश के छात्रों की तकलीफों से कोई फर्क नहीं पड़ता।



अगर हमारी कमियों, हमारी गलतियों या बातचीत के इस दर्दनाक फासले की वजह से आपके दिल में ऐसी कोई भी बात आई है, तो मैं आज आपके सामने खड़ा हूँ और आप सब से हाथ जोड़कर दिल से माफी माँगता हूँ।

यह खुला पत्र हमारे बीच की इस दूरी को तुरंत खत्म करने की एक ईमानदार और जरूरी कोशिश है। मैं आपके सामने अपने दिल की बात रखना चाहता हूँ और पेपर लीक के इस बड़े संकट से जुड़े सच को खुलकर साझा करना चाहता हूँ जिसने आपके भरोसे को पूरी तरह तोड़कर रख दिया है।



@yours_wishfully

हम विकट चुनौतियों का सामना कर रहे हैं

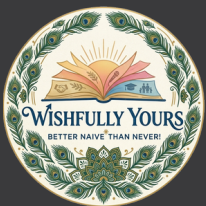
साल 2021 में जब मैंने केंद्रीय शिक्षा मंत्री का जिम्मा संभाला था, तब से मेरी टीम और मैंने पूरी लगन से काम किया। हमने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के तहत शिक्षा व्यवस्था में बड़े और क्रांतिकारी बदलाव लाने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश की।



हमने देश भर में युवाओं के स्किल डेवलपमेंट (कौशल विकास) पर अपनी पूरी ताकत लगा दी। लेकिन प्लीज मेरी एक बात समझिए, आज इस पत्र को लिखने का मेरा मकसद अपनी पीठ थपथपाना, अपनी उपलब्धियों का प्रचार करना या आंकड़ों के पीछे छिपना बिल्कुल नहीं है।



हकीकत यह है कि भारत एक बहुत बड़ा देश है, जहाँ हर मोड़ पर बहुत बड़ी चुनौतियाँ खड़ी हैं —और शिक्षा इनमें सबसे मुश्किल और जटिल क्षेत्र है। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करना सड़कों या पुलों जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर को बनाने जैसा बिल्कुल नहीं है। जब हम कोई पुल बनाते हैं, तो हम बेजान चीजों से निपटते हैं; लेकिन शिक्षा में हमें इंसानों के दिमाग और उनकी आत्मा को संवारना होता है। यह सचमुच एक बहुत ही भारी और कठिन जिम्मेदारी है।



@yours_wishfully

हम अपनी कमियों को मानते हैं और स्वीकार करते हैं

शिक्षा के कुछ बड़े हिस्सों को सुधारने और बदलने के चक्कर में, हमसे व्यवस्था के कुछ दूसरे बेहद जरूरी और संवेदनशील पहलू पूरी तरह छूट गए। हमारी इसी चूक की वजह से देश की इतनी प्रतिष्ठित परीक्षाओं में गड़बड़ी हुई और धोखेबाजों ने पेपर लीक कर दिए। इसी का सबसे दुखद और भयानक नतीजा यह हुआ कि हमारे कई होनहार बच्चों को आत्महत्या जैसा खौफनाक कदम उठाना पड़ा।



छात्रों द्वारा आत्महत्या किया जाना हमारे देश के माथे पर एक बहुत बड़ा और दर्दनाक कलंक है। हम इस संकट को दूर करने के लिए अपनी तरफ से हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं। खुद हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी भी छात्रों के मानसिक तनाव को दूर करने के लिए इसमें निजी तौर पर गहरी रुचि लेते हैं और लगातार उनका हौसला बढ़ाते हैं। लेकिन आज हमें बेहद विनम्रता के साथ यह मानना होगा कि हमारे सामने खड़ी चुनौतियाँ बहुत बड़ी हैं और हमारे अब तक के इंतजाम पूरी तरह नाकाफी साबित हुए हैं।



@yours_wishfully

मेरा इस्तीफा मेरा अपना व्यक्तिगत निर्णय है

कई बार सरकार में बैठे हुए हम लोग खुद को बेहद लाचार महसूस करते हैं, क्योंकि भले ही हम इस पूरी व्यवस्था के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन इन परीक्षाओं को कराने वाली संस्थाओं के रोजमर्रा के कामों में हमारा कोई सीधा दखल नहीं होता। लेकिन, मैं इन तकनीकी बातों के पीछे छिपना नहीं चाहता।

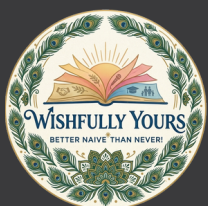


इस मंत्रालय के राजनीतिक मुखिया होने के नाते, मैं यह बात बहुत अच्छे से समझता हूँ कि हाल ही में सिस्टम में जो भी कमियाँ और नाकामियाँ सामने आई हैं, उनकी पूरी नैतिक जिम्मेदारी मेरी है। इसलिए, मैं अपने पद से हटने का फैसला कर रहा हूँ।



मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मुझे अपने नेतृत्व और सरकार का पूरा भरोसा और साथ हासिल है। प्रशासन के भीतर से मुझ पर इस बात का भारी दबाव था कि मैं अपने पद पर बना रहूँ और अंदर रहकर ही इन कमियों को ठीक करूँ।

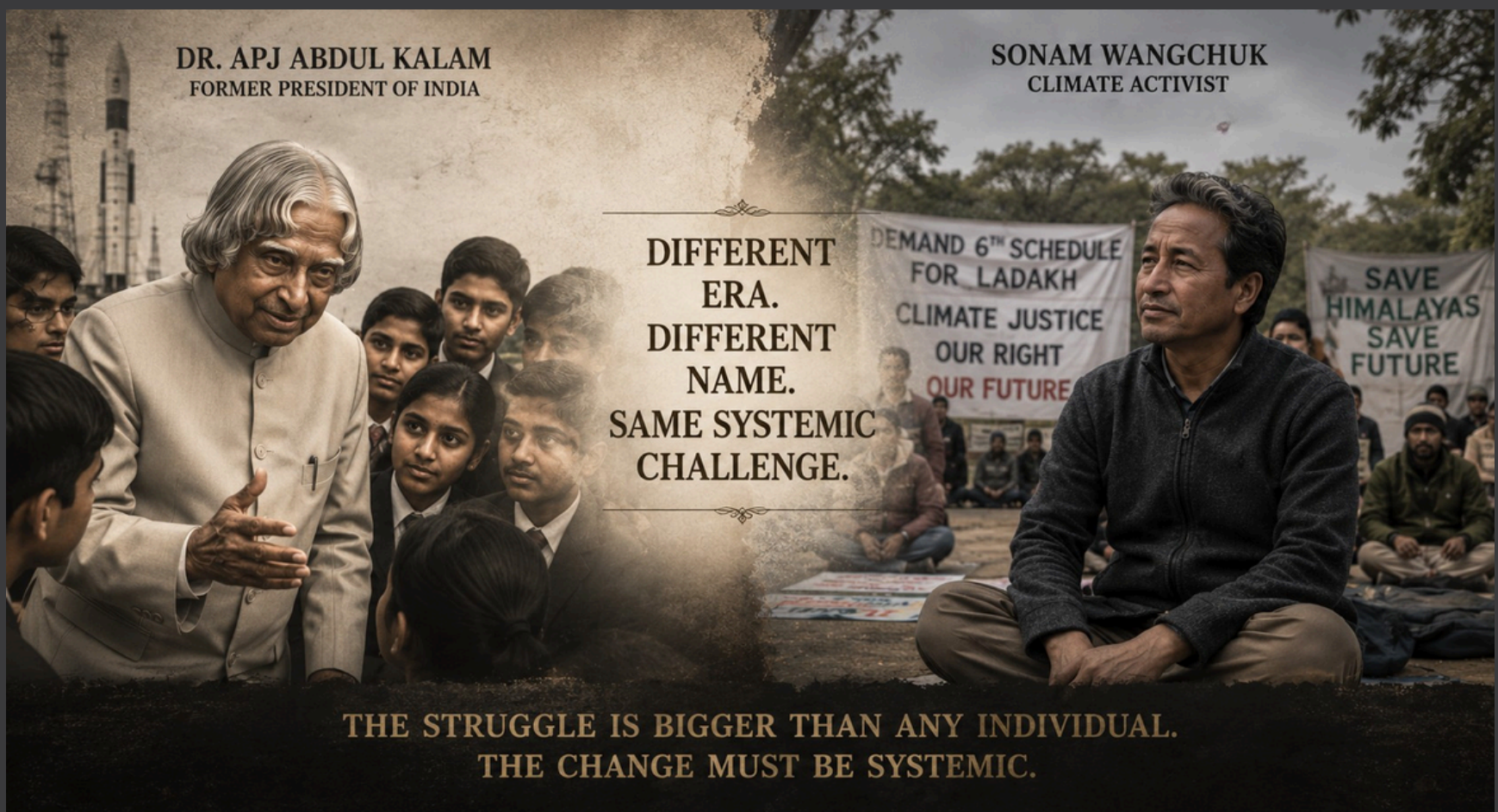
लेकिन उस दबाव के बावजूद, मैंने पूरी तरह से अपने विवेक के आधार पर शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। मैं देश के करोड़ों युवाओं की आँखों में यह बेबसी और उनके टूटे हुए सपनों का दर्द और ज्यादा नहीं देख सकता।



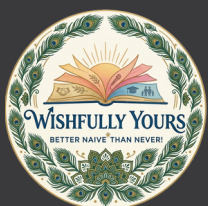
@yours_wishfully

कोई चमत्कार नहीं होने वाला है

इसके साथ ही, मैं आपसे पूरी ईमानदारी के साथ एक बात और कहना चाहता हूँ: मैं ऐसा बिल्कुल नहीं मानता कि सिर्फ किसी एक इस्तीफे से ये सारी पुरानी समस्याएं रातों-रात जादुई रूप से खत्म हो जाएंगी, या हमारे सरकारी सिस्टम से सारी गड़बड़ियां अचानक गायब हो जाएंगी—फिर चाहे मेरी जगह आदरणीय श्री सोनम वांगचुक जी जैसे महान दूरदर्शी व्यक्ति को ही कल शिक्षा मंत्री क्यों न बना दिया जाए। हमें याद रखना होगा कि हमारे चहेते पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी ने भी अपने कार्यकाल में शिक्षा व्यवस्था को बदलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी थी, लेकिन हम सब जानते हैं कि व्यवस्था की गहरी और बुनियादी कमियां तब भी बनी हुई थीं।



इसलिए, शिक्षा मंत्री के पद को छोड़ते हुए मेरा सरकार और आप सभी से एक छोटा सा अनुरोध है कि हमने सुधार और विकास का जो काम शुरू किया था, मुझे उसमें किसी भी रूप में आगे भी काम करने का मौका दिया जाए—चाहे एक वॉलंटियर के रूप में, एक सलाहकार के रूप में, या इस मुहिम के एक सिपाही के रूप में।



@yours_wishfully

हमारे प्रयासों में शामिल होकर हमारी मदद करें

इसके अलावा, मैं सरकार से पुरजोर अपील करता हूँ कि वे हमारे देश के सबसे होनहार युवाओं को इन समस्याओं के समाधान का एक जरूरी हिस्सा बनाएं। नीतियों को बनाने में आपकी सीधी हिस्सेदारी तय होनी चाहिए। भविष्य में जनता और नेताओं के बीच पैदा होने वाले अविश्वास और इस तरह के टकराव को रोकने का सिर्फ यही एक रास्ता है।

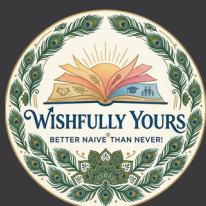


उन सभी छात्रों के परिवारों के प्रति, जिन्होंने इस सिस्टम की कमियों के कारण अपने बच्चों को खो दिया, मैं अपनी गहरी से गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे इस इस्तीफे से युवाओं का गुस्सा शांत होगा, माहौल थोड़ा ठंडा होगा, ताकि पूरा देश अपना ध्यान भटकाए बिना शिक्षा व्यवस्था को अंदर से सुधारने के असली काम पर लगा सके।

आप तक अपनी बात पहुँचाने में जो देरी हुई, उसके लिए मुझे सचमुच बहुत खेद है। मैं बस इतनी उम्मीद करता हूँ कि आप यह समझेंगे कि यह फैसला लेना मेरे लिए उतना आसान नहीं था, जितना कि बाहर से देखने वाले दुखी और नाराज लोगों को लग सकता है।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि हमारे युवाओं को न्याय मिले, और भारत की शिक्षा व्यवस्था इस मुश्किल दौर से निकलकर और मजबूत बनकर उभरे।

**बेहद विनम्रता और सम्मान के साथ,
आपका, धर्मेन्द्र प्रधान**



@yours_wishfully

⚠️ जरूरी डिस्क्लेमर (Disclaimer) ⚠️

यह पत्र पूरी तरह से काल्पनिक (Imaginary) है और एक "win-win" स्थिति की कल्पना करने के लिए लिखा गया है। इसका वास्तविक घटनाक्रम, माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान या सरकार के किसी आधिकारिक पत्र से कोई संबंध नहीं है।

⚖️ कानूनी अस्वीकरण (LEGAL DISCLAIMER) ⚖️

महत्वपूर्ण सूचना, रचनात्मक संदर्भ, और कानूनी आरक्षण

- सामग्री की प्रकृति:** 'विशफुली योर्स' द्वारा इस प्रसारण/प्रकाशन में प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से काल्पनिक कथा, रचनात्मक परिकल्पना और कलात्मक अभिव्यक्ति है। यह काल्पनिक, आदर्श परिदृश्यों, वैकल्पिक संभावनाओं और "क्या-होगा-यदि" जैसी कहानियों को दर्शाता है, जिसका उद्देश्य नागरिक कल्पना, सकारात्मक संवाद और सार्वजनिक जागरूकता को बढ़ावा देना है। इस रचना में दर्शाई गई कोई भी घटना, बयान, कार्रवाई, पत्र या संवाद वास्तव में घटित नहीं हुए हैं, और न ही ये भविष्य की वास्तविक घटनाओं की भविष्यवाणी करने का दावा करते हैं।
- निष्पक्ष अभिव्यक्ति और व्यंग्य/आदर्शवादी कथा:** इस सामग्री का निर्माण और साझाकरण सामाजिक टिप्पणी, सकारात्मक व्यंग्य और रचनात्मक नागरिक जुड़ाव के रूप में पूरी निष्ठा के साथ किया गया है। इसका उद्देश्य अत्यधिक आदर्शवादी, काल्पनिक समाधानों के माध्यम से व्यवस्थागत सामाजिक मुद्दों को उजागर करना है। यह भाषण की स्वतंत्रता, कलात्मक अभिव्यक्ति और निष्पक्ष टिप्पणी की संवैधानिक गारंटियों के तहत संरक्षित है।
- मानहानि या गुमराह करने का कोई इरादा नहीं:** इन काल्पनिक कहानियों के भीतर वास्तविक दुनिया के सार्वजनिक व्यक्तित्वों, सरकारी अधिकारियों, संस्थानों या संगठनों का कोई भी चित्रण विशुद्ध रूप से रचनात्मक रूपक और व्यवस्थागत आलोचना के उद्देश्य से किया गया है। किसी भी व्यक्ति, राजनीतिक दल, कार्यालय या संस्थान को बदनाम करने, उसकी छवि खराब करने, गलत तरीके से प्रस्तुत करने या उसकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने का रत्ती भर भी इरादा नहीं है। इसके अलावा, यह सामग्री स्पष्ट रूप से इस तरह तैयार की गई है कि यह किसी को धोखा न दे, गुमराह न करे या गलत सूचना/फर्जी खबरें न फैलाए; इस पाठ/वीडियो की रचनात्मक और गैर-तथ्यात्मक प्रकृति को सार्वजनिक रूप से स्पष्ट घोषित किया गया है।
- वास्तविकता से पृथक्ता:** दर्शकों, पाठकों और श्रोताओं को स्पष्ट रूप से आगाह किया जाता है कि वे इस सामग्री के किसी भी हिस्से को वास्तविक समाचार, पत्रकारिता रिपोर्टिंग या आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति के रूप में न लें। चल रही सार्वजनिक घटनाओं के बारे में वास्तविक और सत्यापित अपडेट के लिए, कृपया आधिकारिक सरकारी सूचनाओं या मान्यता प्राप्त, मुख्यधारा की समाचार एजेंसियों का संदर्भ लें।
- गैर-अनुमोदन और सीमित दायित्व:** इस चैनल/प्लेटफॉर्म के निर्माता इस रचनात्मक कल्पना को किसी तीसरे पक्ष द्वारा समझने, साझा करने या अपनाए जाने के तरीके के लिए कोई कानूनी दायित्व या जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करते हैं। इस सामग्री को देखना/पढ़ना जारी रखकर, उपयोगकर्ता स्वीकार करता है और सहमति देता है कि वे इसकी काल्पनिक और अनुमानित प्रकृति को समझते हैं, तथा कहानी की किसी भी गलतफहमी या गलत व्याख्या से उत्पन्न होने वाले किसी भी दावे से निर्माताओं को मुक्त करते हैं।



@yours_wishfully

The Mission:

“We don’t report what happened yesterday; we visualize what humanity has the power to do tomorrow. Welcome to a broadcast from the world we actually deserve”.

Our Goals:

At Wishfully Yours, we believe that society cannot fix a problem until it can clearly visualize the solution. Our goals transcend traditional reporting:

1. To Battle Civic Despair with Constructive Hope:

- Traditional news tells you everything that is going wrong, often leaving citizens feeling helpless, cynical, and detached. Our goal is to inject radical, constructive hope back into the public consciousness by showing that better outcomes are entirely possible when empathy takes center stage.

2. To Model "The Highest Path" for Our Leaders:

- We don't use fiction to criticize; we use it to elevate. By portraying public figures, government bodies, and institutions acting with extraordinary moral courage, humility, and transparency, we provide a blueprint for true statesmanship. We aim to show that listening to the people is never a political defeat—it is the ultimate victory.

3. To Reclaim "Naive" as a Force for Good:

- Cynics often dismiss peaceful resolution, deep empathy, and structural accountability as "naive" or "unrealistic." We proudly reclaim that label. Our goal is to prove that being passionately, relentlessly "naive" about human goodness is far more productive than settling for systemic apathy.

4. To Bridge Communication Gaps:

- In times of national crisis, walls of ego and administrative silence often divide the government from its citizens. We aim to act as a creative bridge—co-writing the scripts of mutual respect, dignified dialogue, and "win-win" resolutions that both sides can look up to.

5. To Inspire Real-World Action Through Imagination:

- By holding up a mirror of an idealized world, we create an invisible but powerful moral benchmark. We want our audience—and our leaders—to finish reading a Wishfully Yours bulletin and ask themselves the ultimate question: “If this is what the best version of us looks like... why can't we build it tomorrow?”



@yours_wishfully



Follow us:

@yours_wishfully

(Link in Bio)



"आइए मिलकर एक नए और सशक्त भारत का निर्माण करें।
कृपया अपने विचार हमारे साथ साझा करें।"